मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 60, मई(प्रथम), 2019

वर्तमान परिवेश में नैतिक शिक्षा की प्रासंगिकता

डॉ. सुनील कुमार परीट

क्या कोई स्पष्ट कर सकता है कि इस वर्तमान परिवेश में मानव समाज किस ओर अग्रसर है? जवाब भी स्पष्ट होगा कि विनाश की ओर। इसका मूल कारण भी हमने ढूँढ लिया है कि नैतिक शिक्षा का अभाव। तो फिर समझते-सुलझते हुए क्या हम बच्चों में, समाज में नैतिक शिक्षा भर रहे हैं? अगर फिर हमारे सामने यह सवाल उठ खडा होता है तो निश्चित रुप से हम निरुत्तर बन जाते है, पर सोचनेवाली बात है कि हम असहायक नहीं। पर हम समय से, इस परिस्थिति से जकड गए हैं। नैतिक मूल्यों के बारेमें, नैतिक शिक्षा के बारेमें सोच ही नहीं रहे हैं। अगर यही हालात रहे तो सच में क्या हम मानव या मनुष्य कहलाने के लायक रहेंगे? यह बातें कुछ खार लगेंगे, पर हमारे लिए, इस मानवकुल के लिए बहुत ही जरुरी हैं। जबकि जंगल में रहनेवाले क्रूर प्राणि सोच रहे हैं कि उन्हें मिल-जुलकर प्रेम से रहना चाहिए क्योंकि वे आज के मानव नहीं हैं।

नैतिक शिक्षा से मानव में, बच्चों में नैतिक मूल्य भर सकते हैं, क्योंकि वर्तमान युग में चारों ओर अशांति, अत्याचार, भ्रष्टाचार, हिंसा, आतंकवाद का ताण्डव है। मानव आपसी प्रेम भूल गया है। आज की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में कोई मूल्य बचे नहीं । स्वार्थपरता, स्वजन पक्षहित ही आज शाश्वत गुण सा प्रतीत हो रहा है। ऐसी गंभीर स्थिति का या अराजकता का मूल कारण गिरते नैतिक मूल्य या नैतिक शिक्षा का अभाव मान लेना चाहिए। इस संदर्भ में **ओम कुमार** जी कथन है कि- " **प्रोद्योगिकी बाजार और इसके संचार माध्यमों को सदैव एक सनसनी की आवश्यकता रहती है, चाहे वह सत्य से जूडी हो अथवा नहीं । इस सनसनी को उत्पन्न करने के लिए वह नैतिकता के तमाम मूल्यों को दर किनार कर किसी भी हद तक जाने को तैयार है। मीडिया चैनल अपनी रेटिंग को बढाने के लिए नैतिकता के तमाम मानदडों को ध्वस्त करने की होड में लगे हैं। नवीनतम, युध्द को भी ये किसी मनोरंजक प्रोग्राम के रुप में प्रस्तुत करते हैं और लोग उसे चिप्स और भजिया खाते हुए चटखारे लेकर देखते हैं। बाजारवाद के इस अमानवीय और क्रूर चेहरे ने मानवीय संवेदना को निरस्त करने तथा उसके स्थान पर यांत्रिक मानव को खडा करने की ओर तेजी से कदम बढा लिया है।**"

भारतीय महाग्रंथ वेद, पुराण, उपनिषद रामायण, महाभारत, श्रीमद भगवत गीता

आदि में जो नैतिक मूल्य दर्शाया गया है, उनके आधार पर साहित्य का सृजन हो तो निश्चय ही पाठकों में, सामाज में नैतिक मूल्य पुन: प्रतिष्ष्ठापित करना कठिन नहीं है। साहित्य की अनेक विधाएँ हैं, जैसे कि, कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध आदि विधाओं द्वारा नैतिक मूल्य उपजा जा सकता है। इस संदर्भ में **डॉ. संज्ञा गोयल** जी का कहना है- " **किसी भी भाषा का साहित्य उसकी संस्कृति का वाणी होता है। काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि विविध विधाओं में संस्क्ति विशेष के तव्त उसी भाँति व्याप्त होते हैं जैसे दूध में मक्खन । अत: साहित्य के माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों का बोध कराया जा सकता है। छात्रों को सत्यं, शिवं सुंदरमजैसे मूल्यों का आत्मसतीकरण साहित्य के माध्यम से कराया जा सकता है**।"

एक ओर समाज में जटिलता निर्माण हो रहा है, धर्म संकट में पड रहा है, राजनीति में अस्थिरता पैदा हो रही है और आर्थिक गिरावट हो रही है, तो ऐसे संदर्भ में साहित्य का टिका रहना एक महत्वपूर्ण बात है। आज इस तरह विकट परिस्थिति निर्माण होने का मूल कारण नैतिक मूल्यों में गिरावट ही मानना चाहिए। परन्तु साहित्य ने मात्र हार नहीं मानी है। साहित्य नैतिक मूल्यों की पुन: प्रतिष्ठापना करने का प्रयास निरंतर कर रहा है, और आगे भी करता रहेगा। इसलिए **डॉ. विश्वम्बर पाण्डेय** जी कहते जैं- " **साहित्य ही वह जगह है जहाँ हमारे समाज की कशमकश, उसकी छटापटाहट, उसके सामने परोसे जा रहे समाज के विरुप, कुछ संजीदगी और सच्चाई के साथ दर्ज हो रहे हैं। जहाँ लगातार इंसान बने रहने की मुश्किलों से जूडी गवाहियाँ दी जा रही हैं।**" तो स्थिति ही ऐसी बनी है कि अगर ऐसे समाज में जीना भी मुश्किल हो गया है और मरणा भी। क्योंकि जिसे देखो वह भाग रहा है कोई पैसे के पीछे, अन्याय के पीछे, आडंबर के पीछे, विनाश के पीछे। तो अब करे तो क्या करे? इसलिए **श्री राजेश जोशी** जी की पंक्तियाँ याद आती हैं-

"सबसे बडा अपराध है इस समय
निहत्ये और निरपराध होना
जो अपराधी नहीं होंगे
मारे जायेंगे ।"

देश की उन्नति सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितिओं पर अवलंबित होती है। यह सब परिस्थितियाँ सुव्यवस्थित हो तो देश का सर्वांगिण विकास होता है। और इसके लिए नैतिक मूल्यों का होना, उसका पालन करना बहुत जरुरी है। परंतु आज तो दिन-ब-दिन नैतिक मूल्यों में गिरावट हो रही है। आज नैतिकता तो सिर्फ एक शब्द बनकर रह गया है। नैतिकता भूल गये या नैतिक मूल्यों पर प्रहार करें तो भी कोई दण्ड नहीं दिया जाता। परंतु नैतिकता के बिना धर्म, संस्कृति अधूरे रह जायेंगे। नैतिकता के बिना तो मानव जीवन खायी में ढकेल दिया जा रहा है, बचना है और मानव जीवन को भी बचाना है।

आजकल टीवी चैनलों में धार्मिक, सांस्कृतिक या आध्यात्मिक कार्यक्रम कम दिखाए जाते हैं, नाच, गाना, मौज-मस्ती फिल्में ही ज्यादा होती हैं। कम्प्यूटर के आगे बैठकर

इंटरनेट खोलते ही सामने अनेक अश्लिलता के चित्र देखने को मिलते हैं। समाज में चारों ओर अशांति, प्रदूषण फैल गये हैं, इससे मानसिक नियंत्रण खो देते हैं। धर्म के नाम पर अनेक अंधविश्वासों का आचरण करते हैं। स्कूल, कालेजों में दार्शनिक शिक्षा पध्दति के स्थान पर वैज्ञानिक शिक्षा पध्दति के जरिए पढाया जा रहा है। बच्चा पैदा होते ही आज के माता-पिता उसे आया के पास या होस्टल में छोड देते हैं। बच्चों में अच्छे संस्कार भरने तक किसी के पास समय नहीं होता। देश में, राज्यों में राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार, राजनीति में दल बदलाव ऐसे हैं हमारे आदर्श, पथ-दर्शक फैशन के नाम पर भारतीय संकृति को त्यागकर भूलकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते हैं। आधुनिकता के नाम पर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था में अव्यवस्था लाया गया है। आतंकवाद, हिंसा, बॉम्बस्फोट, दहशतवाद से भारतीय संस्कृति को गिराना चाहते हैं। इस तरह के अनेक कारणों से भारतीय नैतिक मूल्यों पर प्रहार किया जा रहा है। उनके दुष्परिणाम से प्रतिदिन नैतिक मूल्यों में गिरावट हो रहा है। इस तरह नैतिक मूल्यों का गिरावट होता ही रहा तो भविष्य में आनेवाले पीढि पर इसका क्या प्रभाव होगा इसके बारे में भी सोचना अत्यावश्यक है। नैतिक मूल्य मानव जीवन कॊ संवारते हैं। नैतिक मूल्यों से मानवीयता, प्रामाणिकता जैसे अच्छे गुणों को आचरण में ला सकते हैं। नैतिकता सामान्य जीवन को असामान्य बनाता है।

*** गिरते नैतिक मूल्यों के प्रमुख कारण :-**

१. मनोरंजन के स्थान पर अश्लिलता
२. संचार माध्यमों की बदलती नीति
३. सामाजिक जटिलता
४. धार्मिक अंधविश्वास
५. राजनीतिक अस्थिरता
६. आर्थिक गिरावट
७. बढ्ते अत्याचार और हिंसा
८. वैज्ञानिक शिक्षा पध्दति
९. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव
१९. मातृ-पितृ वात्सल्य का अभाव
११. यांत्रिक जीवन पध्दति का दुष्प्रभाव
१२. पारिवारिक व्यस्तता
१३. आधुनिकता का प्रभाव
१४. अमानवीयता घटनायों का प्रभाव
१५. धार्मिक संघ-संस्थाओं की निष्क्रियता

सामान्य बात है कि, मानव एक संघजीवि है, समाजजीवि है, और मानव का मिला-जुला रुप ही समाज है। परंतु आज के इस भागदौड की दुनिया में मिल-जुलकर कौन-कहाँ रहता है...? जिसे देखो वह अपने कामों में, उल्झनों में फस गया है। कोई किसी की चिंता

नहीं करता, इससे हम में दूरियाँ बढ रही हैं। और इसका मूल कारण है दिन-ब-दिन गिरते नैतिक मूल्य, नैतिक शिक्षा का अभाव।

सर्वप्रथम इस बात को समझ लेना चाहिए कि, नैतिक मूल्यों के बिना मानव जीवन ही अधूरा है। नैतिक मूल्यों के बिना मानव कभी श्रेष्ठ नहीं बन सकता। आधुनिक युग में नर-संहार, दहशतवाद, आतंकवाद, युध्द, आक्रमण हो रहे हैं। तो इसे नैतिक मूल्यों का अधपतन ही मानना चाहिए। प्राचीन काल शांत था, सुन्दर था क्योंकि तब उन में नैतिक मूल्य थे, मानवीयता-विश्वबन्धुत्व का प्रेम था। मन में मानवीयता , विश्वबंधुत्व के भाव नैतिक मूल्यों के बिना जागृत नहीं होते। आज युध्द आक्रमण होते हैं यानी किसी ना किसी में नैतिक मूल्य गिरे हैं। लंबे चौडे भाषणों से, उपदेशों से किसी में नैतिक मूल्य भरना संभव नहीं है। नैतिक मूल्य तो मानव मन मस्तिष्क की समान क्रिया है। बुजुर्गों के, माता-पिता के प्रभाव से नैतिक मूल्य भविष्य के लिए साभार होते हैं। आज के युग में नैतिक मूल्यों की जरुरत उतनी है, कि नैतिक मूल्यों के बगैर जीवन ही असफल है, जीवन की सार्थकता ही नहीं हो सकती।

कुछ बिगाडा है तो उसका हल भी जरुर होगा, अभी भी यह कोई अन्त नहीं है। संसार में असंभव नाम की कोई चीज नहीं है, और यह सबकुछ सिर्फ मानव के हाथों से ही संभव हो सकता है, और इसे नैतिक मूल्यों का जोड चाहिए। मानव और नैतिक मूल्य एक सिक्के के दो पहलु हैं, नैतिक मूल्यों को किसी भी हाल में अपनाना ही होगा, वरना मानव जीवन सूना-सूना हो जायेगा । नैतिक मूल्य ही निज आभूषण हैं। इसलिए नैतिक मूल्य और मानव का बहुत घनिष्ठ संबंध है। सकल प्राणिओं में मानव श्रेष्ठ है तो इसका कारण मानव में बसे नैतिक मूल्यों के गुण। मानव एक ऎसा सार्वकालिक प्राणी है जो सदैव अपने मूल्यों द्वारा ही पहचाना जाता है। आओ सब मिलकर बच्चों में, समाज में नैतिक शिक्षा द्वारा नैतिक मूल्य भरकर जो शान-मान खोया है, फिर से हासिल करे, और भारत को विश्वगुरु बनाये।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें